भजन

तर्ज–डोली चढ़ के दुल्हन

डोली ले के पिया निजधाम चलो
बड़ी देर भई अब घर को चलो

1–प्यार मिलता सदा तेरा निजधाम में
झूठ मे बैठे हम व्यर्थ के काम में
जिन्दगी अब तो सूनी लगे ये पिया
चौन आता है मिलके निजधाम में
2–इश्क मिलता है हर पल नजर से तेरी
चेतन है गगन और धरती तेरी
सींचंते हो बड़े प्यार से तुम पिया
झूमते वृक्ष डाली परमधाम के
3–बख्श दो भूल मेरी भुला दो पिया
अपने घर अब तो वापिस बुला लो पिया
रह नही सकते तुम रूहों के बिना
किस तरह बैठे गुमसुम हो चुपचाप से